"संसदें स्वयं को जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप ढालें - लोक सभा अध्यक्ष"

न्यूयॉर्क, 18 नवम्बर, 2014 : लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन ने न्यूयॉर्क में संसदों के अध्यक्षों के चतुर्थ विश्व सम्मेलन की प्रिपरेटरी कमेटी की दूसरी बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि संसदों को चाहिए कि वे स्वयं को जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप ढालें जिसके लिए उन्हें नागरिकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने तथा प्रगति और आर्थिक विकास के मार्ग पर समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की जरूरत है ।

'सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों से सबक' तथा *'2015 के बाद भावी विकास एजेंडा'* विषय पर आयोजित सत्र के दौरान उन्होंने कहा कि सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों की उपलब्धि के हमारे संयुक्त ट्रैक रिकॉर्ड में असमानता दिखाई देती है और सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों में निर्धारित संयुक्त मानव विकास संबंधी चुनौतियां ज्यों की त्यों हैं। हालांकि एशियाई देशों के महत्वपूर्ण योगदान के कारण विश्व में निर्धनता दर को कम करने का लक्ष्य समय से पहले प्राप्त कर लिया गया है, फिर भी 1.2 बिलियन लोग सम्मानजनक जीवन से वंचित हैं और वर्तमान दर पर, 970 मिलियन व्यक्ति 2015 में भी निर्धन रहेंगे। अतः,2015 के बाद की अवधि के विकास एजेंडा में निर्धनता उन्मूलन को केंद्रीय और सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाना होगा ।

श्रीमती महाजन ने "महिला-पुरूष समानता के मुद्दे को प्रमुखता देना" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महिला-पुरुष समानता के मुद्दे को प्रमुखता देना आदर्श विकास के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है । निर्णय लेने और नीतियां तैयार करने में महिलाओं की सहभागिता, महिला साक्षरता में सुधार, उत्पादक संसाधनों और अवसरों तक महिलाओं की पहुँच बढ़ाने और महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषाहार निवेश से आर्थिक विकास में लगातार वृद्धि होती है और गरीबी कम होती है । उन्होंने कहा कि भारत में महिला-पुरुष समानता के बारे में अनूठा दृष्टिकोण है और भारत महिलाओं को अधिकारसंपन्न बनाने में अग्रणी रहा है । भारत के स्वाधीनता संग्राम और तदनन्तर राजनीतिक विकास के दौरान महिलाओं को समान राजनीतिक अधिकार मिले हैं ।